समकालीन हिन्दी भाषा
और
साहित्य : विविध आयाम

संपादक
डॉ. महानंदा पाटील

सह-संपादक
रामकुमार
डॉ. राजशेखर जाधव
डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील

आर. के. पब्लिकेशन
मुम्बई

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-93-91458-72-0

Copyright © Reserved

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 1100/-

शीर्षक	Title
समकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य : विविध आयाम	Samkaleen Hindi Bhasha aur Sahitya : Vividh Aayam
संपादक	Editor
डॉ. महानंदा पाटील	Dr. Mahananda Patil
प्रकाशक	Publisher
आर.के. पब्लिकेशन	R. K. Publication
1/12, पारस दूबे सोसायटी,	1/12, Paras Dubey Society,
ओवरी पाडा, एस.वी.रोड,	Ovari Pada, S. V. Road,
दहिसर (पूर्व),	Dahisar-East,
मुम्बई - 400 068	Mumbai - 400 068

Phone : 9022 521190 / 9821251190

E-mail : publicationrk@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र

virar.mishra63@gmail.com

आवरण : सुनील निंबरे, विद्या उम्मर्जी

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

12. उपन्यासों में मानवीय मूल्य : एक अवधारणा
- डॉ. महानंदा पाटील 92

13. हिन्दी साहित्य में अल्पसंख्यक विमर्श
- डॉ. पठान रहीम खान 96

14. समकालीन साहित्य में सामाजिक चेतना
- डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील 103

15. स्त्री-विमर्श
- किशोरी लाल, जोशीमठ 111

16. मानव चेतना के निर्माण में महात्मा गांधी जी के विचार (सत्याग्रह, रंगभेद और सामाजिक व्यवस्था)
- डॉ. शशि कश्यप
- डॉ. तपेश चंद्र गुप्ता 115

17. छत्तीसगढ़ के प्रमुख आदिवासी पर्यटन उद्योग : संभावनाएं (पुरखौती मुक्तांगन संग्रहालय के विशेष संदर्भ में)
- राहुल साकरकर 120

18. स्त्री-विमर्श
'सदियों से चल रही जंग का अंत कब - कैसे....?'
- डॉ. महादेव जे. संकपाल 124

19. हिन्दी कथा साहित्य में दलित विमर्श
- वहीदा दाऊदजी 127

20. हिन्दी और रोजगार की संभावनाएं
- प्रो. सुनील ब. ताटे 133

21. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का स्थान
- प्रा. राहुल जयसिंग बहोत 138

Scanned with OKEN Scanner

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का स्थान

– प्रा. राहुल जयसिंग बहोत

भाषा मनुष्य के भाव तथा सम्प्रेषण को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। इसके जरिए मनुष्य समाज तथा समुह में रहकर अपने विचारों को व्यक्त करता है। भाषा चाहे कोई भी हो उसका व्यापक स्तर उसके बोलनेवाले लोगों की संख्या पर निर्भर होता हैं। विभिन्नता में एकता को प्रतिपादित करनेवाले हमारे भारत देश में कई भाषाएँ बोली तथा समझी जाती है। अपितु भाषाई व्यवस्था के आधार पर भाव सम्प्रेषण की दृष्टि से विचार किया जाय तो सर्वाधिक बोली तथा समझी जानेवाली एवं व्यावहारिक उपयोग मे पायी जानेवाली श्रेणी में हिन्दी भाषा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हैं। हिन्दी हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरोनेवाली सहज, सरल भाषा हैं इसलिए वह सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सशक्त मानी जाती हैं।

आज वैश्विकरण या भूमण्डलीकरण का अर्थ है, विश्व में चारों ओर अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ता हुआ एकीकरण। वैश्विकरण की यह अवधारणा मात्र अर्थव्यवस्था ही नहीं बल्कि भाषायी संस्कार से भी जुड़ चुकी हैं। वैश्विकरण के इस प्रवाह में हिन्दी भाषा तथा साहित्य एक नयी ऊँचाई को प्राप्त कर चुका हैं। वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का अवलोकन करें तो 1952 ई. में हिन्दी विश्व में पाँचवे स्थान पर थी जबकि 1980 ई. के आसपास वह चीनी (मंदारीन) भाषा और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गयी हैं। इस संबंध में प्रसिद्ध भाषाविद जयंती प्रसाद नौटियाल का कहना है कि "विश्व में हिन्दी प्रयोग करनेवालों की संख्या चीन से भी अधिक है और हिन्दी अब प्रथम स्थान पर है।"[1]

वैश्विकरण से तात्पर्य

वैश्विकरण शब्द का उपयोग अधिकतर व्यापार पूँजी प्रवाह, प्रोद्योगिकी एवं आर्थिक वैश्विकरण के संदर्भ में किया जाता हैं। विश्व के सभी बाजारों के एकजुट होकर कार्य करने की प्रक्रिया को वैश्विकरण कहते हैं। सरल शब्दों में कहे तो वैश्विकरण व्यापारिक क्रियाकलापों का अंतरराष्ट्रीयकरण

है जिसके अंतर्गत संपूर्ण विश्व एक ही बाजार के रूप में देखा जाता हैं।

संक्षिप्त में वैश्विकरण को परिभाषीत करते हुए हम सरल शब्दों में कह सकते हैं, जब देश-विदेश के बाजार एक साथ मिलकर काम करते हैं, तब ऐसी परिस्थिती को वैश्विकरण (ग्लोबलायझेशन) कहते हैं।

हिन्दी भाषा को बृहत इतिहास प्राप्त है। हिन्दी के प्रारम्भिक हिन्दी भाषा के स्वरूप का विकास उत्तर अपभ्रंशकालीन युग से ग्यारहवीं शताब्दी से हुआ। पृथ्वीराज चौहान, मुहम्मद घोरी, अल्लाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुघलक आदी के शासन काल से लेकर कहीं न कहीं ब्रजमिश्रित भाषा का प्रयोग मिलता हैं। डॉ. आबिद हुसैन कहते हैं कि, "सिकंदर लोदी के शासनकाल में राज्य का हिसाब किताब हिन्दी में होता था।"[2] मुगलों की दरबारी अर्थात् राजकाज की भाषा ऊपरी तौर पर फारसी भले ही रही हो, पर बोलचाल की भाषा उस समय कश्मीर, पंजाब, उत्तरी प्रदेश, बिहार, मध्य भारत आदि में हिन्दी भाषा ही अंतर भाषा के रूप में विकसित हुई। 18वीं शताब्दी के पश्चात हिन्दी ने अपना एक विकसित रूप धारण कर लिया था। भारतीय आर्य भाषाओं में हिन्दी का स्थान प्रथम हैं।

अंग्रेजों के शासनकाल में लॉर्ड मेकॉले ने भले ही अंग्रेजी की अनिवार्यता एक ओर की थी किंतु ऊपरी स्थान पर हेनरी टॉमस कोलेबक ने कहा, "जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रान्त के लोग करते हैं, जो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा है, उसका यथार्थ नाम हिन्दी है।"[3] इससे ज्ञात होता है कि भारतीय जनमानस में हिन्दी का रुझान प्रारम्भ से ही रहा हैं। साथ ही 4 मई 1870 ई. मार्क्स वेलेजली द्वारा स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के पश्चात हिन्दी के स्वरूप को विकसित करने में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। कालांतर से इसे एक सर्वमान्य भाषा के रूप में खड़ी बोली नाम से अभिहित किया गया।

स्वाधीन भारत आंदोलन ने तो हिन्दी को राष्ट्रीय एकात्मता का स्वरूप प्रदान किया। आजादी के स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी भाषा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता प्राप्ती के लिए भारतीय जनमानस को आजादी के प्रति सचेत करने के लिए हिन्दी में संदेश प्रसारित किए गए। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा का कार्य उल्लेखनीय

Scanned with OKEN Scanner

रहा है। भारतीय जनमानस को आजादी के समर में कूद पड़ने के लिए तथा देश के प्रति अपनी आस्था को उजागर करने के लिए हिन्दी भाषा को केन्द्र में रखकर बृहत कार्य किया।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का स्थान

21वीं सदी के पहले दशक में हिन्दी भाषा में जो परिवर्तन हुए हैं, वे साधारण नहीं हैं। आज हिन्दी का स्वरूप ग्लोबल हो चला हैं। व्याकरणिक संरचना, व्यावहारिकता, बढ़ता जनसंपर्क, साहित्यिक महत्त्व आदि की दृष्टि से आज हिन्दी का महत्त्व अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर बढ़ रहा हैं। आज हिन्दी भाषा का अध्ययन विश्व के अनेक देशों में विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा हैं। जिसमें मॉरीशस, फिजी, हॉलैंड, जर्मनी, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, सुरीनाम, रूस, चीन, जापान आदि। विदेशों में कई प्रवासी भारतीयों द्वारा हिन्दी के संदर्भ में बृहत कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में स्वीडन की सुप्रसिद्ध हिन्दी प्रचारक सुश्री सेरेना ब्रेतोऐवा एवं स्वीडन के चार्ल्स थॉमसन जैसे हिन्दी प्रेमी दिखाई देते हैं। जो हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रहे हैं।

हिन्दी के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को सर्वाधिक गति तथा महत्त्व प्राप्त हुआ वह हमारे देश के नेताओं ने समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष किया। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने सन् 1977 में विदेश मंत्री के रूप में कार्यरत समय में यु.एन.ओ. (युनो) में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए हिन्दी में भाषण किया। उसके कुछ अंश हिन्दी की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं जैसे- "मैं भारत की जनता की ओर से राष्ट्रसंघ के लिए शुभकामनाओं का संदेश लाया हूँ महासभा के इस 32 वें अधिवेशन के अवसर पर मैं राष्ट्रसंघ में भारत की दृढ़ आस्था को पुनः व्यक्त करना चाहता हूँ।.... xxx वसुधैव कुटुम्बकम की कल्पना बहुत पुरानी हैं। भारत में सदा से हमारा इस धारणा में विश्वास रहा है कि सारा संसार एक परिवार हैं। अनेकानेक प्रयत्नों और कष्टों के बाद संयुक्त राष्ट्र के रूप में इस स्वप्न के साकार होने की संभावना हैं। इन्ही शुभकामनाओं के साथ मैं अपनी

Scanned with OKEN Scanner

वाणी को विराम देता हूँ, जय हिंद , जय जगत।"[4] यह भी सर्वविदित है कि युनेस्को के बहुत से कार्य हिन्दी में सम्पन्न होते हैं। इसके अलावा अब तक विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस, त्रिनिदाद, लंदन, सुरीनाम तथा न्यूयॉर्क जैसे स्थलों पर सम्पन्न हो चुके हैं, जिनके माध्यम से विश्व स्तर पर हिन्दी का स्वर सम्भार महसूस किया गया। हिन्दी को वैश्विक संदर्भ और व्याप्ति प्रदान करने में भारतीय विद्यापीठों की केंद्रीय भूमिका रही हैं जो विश्व के अनेक राष्ट्रों में फैली हुई हैं। इस विश्वविद्यालयों में शोध स्तर पर हिन्दी का अध्ययन, अध्यापन की सुविधा है, जिसका सर्वाधिक लाभ विदेशी अध्येताओं को मिल रहा हैं।

हिन्दी भाषा को लोकल टु ग्लोबल की ओर अग्रेसर होने में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही हैं। इस संदर्भ में सर्वप्रथम नागपुर में 10 जनवरी 1975 को पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ था। जो सर्वाधिक सफल एवं चर्चा का विषय रहा। हिन्दी भाषा को वैश्विकरण के बीच सँजोने का काम इस माध्यम से किया गया जिससे वसुधैव कुटुम्बकम् की प्रचिती का जीवंत उदाहरण सबके सामने रखा गया। अब तक आयोजित हुए नौ विश्व हिन्दी सम्मेलन इस बात के साक्षी हैं कि वैश्विक स्तर पर हिन्दी अपना एक सर्वमान्य धरातल निर्मित कर चुकी हैं। इन सम्मेलनों में विद्वानों द्वारा पढ़े गए पर्चे, परिचर्चाएं, विमर्श, निष्कर्ष, सुझाव, निर्णय आदि हिन्दी को विश्वव्यापी बनाते हैं।

नागपुर में 10 जनवरी 1975 को पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन संपन्न हुआ था। इसलिए भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 2006 से विश्व हिन्दी दिवस 10 जनवरी को मनाने की घोषणा की। इसलिए सन् 2006 से विश्व के समस्त दूतावासों के साथ-साथ भारत और विश्वभर में विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

बहुत कम लोग इस तथ्य से परिचित है कि संयुक्त राष्ट्र की संस्था युनेस्को ने यह स्वीकार किया है कि हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा हैं। युनेस्को की सात मान्यता प्राप्त भाषाओं में हिन्दी को स्थान प्राप्त है।

हिन्दी भाषा आज महज संवाद का माध्यम भर नहीं रह गई है। बल्कि यह हमारी पहचान और जरूरत बन गई हैं। बदलते समाज और व्यापक

होती जरूरतों के बीच हिन्दी ने तेजी से अपने पंख पसारे हैं जो कि हिन्दी भाषा के विकास के लिए शुभ संकेत हैं। इसका उदाहरण है कि आज सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र में हिन्दी ने अपनी पहचान बनायी हैं। जिसमें कंप्यूटर क्रांती, अनुवाद, आशुलिपी, जनसंचार माध्यमों के विभिन्न संचार संसाधन आदि में हिन्दी भाषा ने अपना अधिकार प्राप्त किया हैं। मायक्रोसॉफ्ट के प्रवर्तक बिल गेट्स ने हिन्दी को कंप्यूटर के लिए उपुक्त भाषा स्वीकार करते हुए द्विभाषिक सॉफ्टवेयरों का मार्ग प्रशस्त किया है। आज वर्ड प्रोसेसिंग, वेब दुनिया आदि में हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा हैं। कंप्यूटर में हिन्दी सॉफ्टवेअर, युनिकोड, टंकण तथा विभिन्न एप्लिकेशन की वजह से सूचना क्रांती का प्रचार-प्रसार तेजी से बढ़ चुका हैं। राष्ट्रीयकृत बैंको के कामकाज, केन्द्रीय सरकारी दफ्तर में तथा उपभोक्ता एवं बाजारवाद के युग में हिन्दी में कंप्यूटर पर कामकाज किए जा रहे हैं। संक्षिप्त में तकनीकि क्षेत्र में हिन्दी ने अपना स्थान निर्धारित कर लिया हैं।

साहित्य के माध्यम से हिन्दी को वैश्विक पहचान मिली है। साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी की भूमिका शुरू से ही कारगर रही हैं। साहित्य के माध्यम से समाज को नयी दिशा देने का कार्य किया गया हैं। जिसमें भाषा मुख्य प्रवाहमयी साबित हुई हैं। हिन्दी, भाषा के माध्यम से प्रारंभिक तथा मध्य काल से ही उद्बोधक हुई हैं। कबीर, सुरदास, तुलसीदास, दादूदयाल, रहीम, भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, निराला, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद आदि साहित्यकारों के माध्यम से हिन्दी साहित्य की वैश्विक पहचान बनी हैं। जिसका परिणाम यह है कि आज विश्वस्तर पर हिन्दी साहित्य ने अपना परचम लहराया है।

इससे स्पष्ट हैं कि हिन्दी को वैश्विक धरातल पर अपनी पहचान सिद्ध कराने में सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक व्यावहारिक सभी दृष्टि से महत्त्व प्राप्त हैं।

हिन्दी आज महज साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि बाजार की भाषा हैं। भूमंडलीकरण के इस दौर में उपभोक्तावादी संस्कृती ने विज्ञापनों को जन्म दिया, जिससे हिन्दी का अनुप्रयोग बढ़ने के साथ-साथ युवाओं को रोजगार के नए अवसर भी प्राप्त हुए हैं बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इस बात से

Scanned with OKEN Scanner

भलीभांति अवगत हैं कि भारत उनके उत्पाद का बड़ा बाजार है और यहाँ के अधिकतर उपभोक्ता हिन्दी भाषी हैं। इसलिए उन्हें अपना उत्पाद बेचने के लिए उसका प्रचार-प्रसार हिन्दी में करना पड़ेगा। परिणामतः हिन्दी आज बाजारवाद की दृष्टि से अत्यंत कारगर साबित हो रही हैं।

विभिन्न देश से निकलनेवाली हिन्दी पत्र पत्रिकाओं ने भी हिन्दी को वैश्विक फलक पर ले जाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को बढ़ावा देनेवाली संस्थाओं में अंतरराष्ट्रीय हिन्दी समिती (संयुक्त राज्य अमिरात), मॉरीशस हिन्दी संस्थान, विश्व हिन्दी सचिवालय (मॉरीशस), हिन्दी सोसायटी (सिंगापुर), हिन्दी परिषद (नीदरलैंड) आदि ने महतत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। आज हिन्दी जो वैश्विक आकार ग्रहण कर रही हैं उसमें रोजी-रोटी की तलाश में अपना वतन छोड़कर गए गिरमिटिया मजदूरों के योगदान को कभी भुलाया नही जा सकता। गिरमिटीया मजदूर अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति भी लेकर गए, जो आज हिन्दी को वैश्विक स्तर पर फैला रही हैं। संप्रति हिन्दी को अंतरराष्ट्रीय दर्जा प्राप्त हुआ है, क्योंकि यह अनेक विदेशी भाषाओं को न केवल स्वीकार करती है, बल्कि विश्व की समस्त भाषाओं को आत्मसात करने की क्षमता रखती हैं। हिन्दी के विकास के लिए विश्व की पैंतीस सौ विदेशी कृतियों का हिन्दी में अनुवाद किया जा चुका हैं।

हाल ही में कोरोना जैसी महामारी का फैलाव तेजी से संपूर्ण देश में हुआ ऐसे समय में देश की जनता को इस बीमारी से आगाह करने के लिए बेहद कम समय में सभी सूचनाएँ एवं संदेश हिन्दी में ही प्रसारित किए गए। देश में तालाबंदी (लॉकडाऊन) की घोषणा हो या बीमारी के संक्रमण से बचने की सावधानियाँ आदि संदेश प्रसारित किए गए ताकि आम जन की भाषा हिन्दी में लोगों को शीघ्र ही इस आपातकाल की गंभिरता का अहसास हो सके। तालाबंदी के समय में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार) तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन की ओर से राष्ट्र की जनता को संबोधित करते हुए संदेश प्रसारित किए गए। राष्ट्र के नाम संदेश या देश की जनता से सीधा संवाद मा.प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी जी द्वारा समय-समय पर दिया गया। यह केवल और केवल हिन्दी भाषा के कारण ही सम्भव हुआ।

स्पष्ट है कि राष्ट्र को एकसंघ बनाने में तथा वैश्विक धरातल पर अपना

Scanned with OKEN Scanner

अस्तित्व सिद्ध करने में हिन्दी ही वह शक्ति हैं जो भारतीयों को संस्कृति के आधार पर जोड़ सकती हैं। निःसंदेह हिन्दी अपने जन्म और कर्म दोनों ही दृष्टियों से सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भाषिक समन्वय तथा सौहार्द का प्रतिक रही हैं।

वैश्विकरण की प्रक्रिया में हिन्दी की महत्ता को समझने पर अत्यधिक हर्ष तो प्रत्येक भारतीय नागरिक को होता है किंतु आज संपूर्ण अभ्यास के दौरान ऐसा भी निष्कर्ष सामने आ रहे हैं कि बढ़ते भूमंडलीकरण, व्यापारीकरण में महासत्ता देशों में भारत के साथ साझा होते हुए भाषिक व्यवस्था में अंतर देखा जा रहा हैं। दो देशों में संवादों के दौरान एक नयी भाषा हिन्दी और इंग्लीश का मिश्रित रूप हिंग्लिश ने जन्म ले लिया हैं। जो आनेवाले कल में हिन्दी के विकास में बाधा निर्माण कर सकती हैं। इस बात को पहचानते हुए हमें हिन्दी के व्यावहारिक, साहित्यिक रूप को आगे सुचारू रूप से बढ़ाना होगा। जिससे बाजारवाद, भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में हिन्दी को कोई अन्य नई भाषा बाधा निर्माण न कर सके।

"निज भाषा उन्नती अहै सब उन्नति के मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय के सूल।"

संदर्भ सूची :

1. राजभाषा हिन्दी- डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, पृष्ठ- 10,15,46,49
2. नवजागरण कालीन हिन्दी- डॉ. संगीता पारेख, श्रीनिवास पब्लिकेशन, वैशाली नगर, जयपुर, पृष्ठ-11,94,139
3. विश्व हिन्दी सम्मेलन अंक (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय)

हिन्दी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय
मनमाड, ता. नांदगाँव, जि.नाशिक (महाराष्ट्र)

❖❃❖

Scanned with OKEN Scanner